

एटालनि जलवदियुत परियोजना

प्रलमिस के लयि:

एटालनि जलवदियुत परियोजना, दबिांग घाटी, वन सलाहकार समति

मेन्स के लयि:

वृद्धि और वकिस को प्राथमकता, वृद्धि और वकिस को पर्यावरण पर प्राथमकता

चर्चा में क्यो?

अरुणाचल प्रदेश में वन्यजीव वैज्ञानिकों और संरक्षणवादियों ने **दबिांग घाटी** में प्रस्तावति **एटालनि जलवदियुत परियोजना (3,097 मेगावाट)** से स्थानीय जैवविविधता के लयि खतरों को चहिनति कयि। इस मुद्दे को उठाने के लयि उन्होंने **केंद्रीय पर्यावरण, वन और जलवायु परविरतन मंत्रालय (MoEF & CC)** के तहत **वन सलाहकार समति (FAC)** से संपर्क कयि।

- **वाइलडलाइफ इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया (WII)** और **राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण (NTCA)** ने परियोजना की मंजूरी पर वचिर करते समय कुछ सुरक्षा उपायों एवं शमन उपायों का संज्ञान लेने का सुझाव दयि है।
- FAC ने वन्यजीवों के साथ-साथ क्षेत्र के स्थानिक वनस्पतियों और जीवों से संबंधति आशंकाओं को समग्र तरीके से दूर करने के लयि एक चार सदस्यीय समति के गठन का आदेश दयि।

दबिांग नदी का महत्त्व:

- यह परियोजना दबिांग नदी पर आधारति है और इसे 7 वर्षों में पूरा करने का प्रस्ताव है।
 - दबिांग ब्रह्मपुत्र नदी की एक सहायक नदी है जो अरुणाचल प्रदेश और असम राज्यों से होकर प्रवाहति होती है।
- इसमें दबिांग की सहायक नदियों: दीर और टैगोन पर दो बाँधों के निर्माण की परकिल्पना की गई है।
- यह परियोजना हिमालयी क्षेत्र के सबसे समृद्ध जैव-भौगोलिक क्षेत्र के अंतर्गत आती है और प्रमुख जैव-भौगोलिक क्षेत्रों जैसे- पैलेरक्टिक ज़ोन और इंडो-मलय क्षेत्र के जंक्शन पर स्थति होगी।
- स्थापति क्षमता के मामले में इसके **भारत की सबसे बड़ी जलवदियुत परियोजनाओं** में से एक होने की उम्मीद है।

पर्यावरणवादियों द्वारा उठाई गई प्रमुख चुनौतियाँ:

- संरक्षणवादियों ने इस बात पर प्रकाश डाला कि **FAC उप-समति** ने प्रस्ताव की सफिरशि करते हुए वन संरक्षण और संबंधति कानूनी मुद्दों के स्थापति सदिधांतों की अनदेखी की।
- FAC ने वन वभिाजन के खतरे को नज़रअंदाज कयि।
 - **वन वभिाजन** का परणाम वकिस परियोजनाओं के प्राकृतिक वनों के साथ सन्नहिति परदृश्यों में गैर-नयिोजति गतविविधियों के रूप में होता है और जैवविविधता हॉटस्पॉट में दुर्लभ पुष्प एवं जीव प्रजातियों के लयि खतरा उत्पन्न होता है।
- FAC की **स्थल नरीक्षण रिपोर्ट** पर भी मुख्य वविरणों को उपेक्षति करने का सवाल उठाय गया था, जैसे कनिरीक्षण की गई अल्टीट्यूडनिल रेंज में ग्रडि की संख्या और वहाँ वनस्पति की स्थति, **वन्यजीव संरक्षण अधनियिम, 1972** की वभिनिन अनुसूचियों में सूचीबद्ध जंगली जानवरों के प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष संकेत एवं क्षेत्र के पारस्थितिकि मूल्य की समग्र सराहना।
- **एटालनि** पर **पर्यावरण प्रभाव आकलन रिपोर्ट** की अपर्याप्तता पर भी प्रकाश डाला गया।
 - वन्यजीव अधिकारियों ने टपिणियों को नज़रअंदाज कर दयि, जसिमें क्षेत्र में 25 वशिव स्तर पर लुप्तप्राय स्तनपायी और पक्षी प्रजातियों के प्रभावति होने का खतरा है।
- बटरफ्लाई और रेप्टाइल पारकों की स्थापना जैसे **प्रस्तावति शमन उपाय अपर्याप्त** हैं।

वन सलाहकार समति (Forest Advisory Committee- FAC):

- FAC 'वन (संरक्षण) अधिनियम, 1980 के तहत स्थापित एक संवधिकि नकिया है ।
- FAC 'केंद्रीय पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय' (Ministry of Environment, Forest and Climate Change-MOEF&CC) के अंतर्गत कार्य करती है ।
- यह समिति गैर-वन उपयोगों जैसे-खनन, औद्योगिक परियोजनाओं आदि के लिये वन भूमि के प्रयोग की अनुमति देने और सरकार को वन मंजूरी के मुद्दे पर सलाह देने का कार्य करती है

आगे की राह

- **समुदाय के नेतृत्व वाला दृष्टिकोण:** क्षेत्र की स्थानीय आबादी से परामर्श किया जाना चाहिये और नरिणय लेने में उनकी भागीदारी होनी चाहिये ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि अंतिम नरिणय लेने से उनकी चिंताओं को प्रतिबिंबित किया जा सके ।
- **पारस्थितिकि संवेदनशील क्षेत्रों का सीमांकन:** जिन क्षेत्रों में जैवविविधता के नुकसान का खतरा है, उन्हें यह सुनिश्चित करने के लिये उचित रूप से चिह्नित किया जाना चाहिये कि वे अबाधित रहें ।
- **पर्यावरण प्रभाव मूल्यांकन (ईआईए):** स्थानीय पर्यावरण पर परियोजना के प्रभाव का व्यापक रूप से एक उचित और पूर्ण मूल्यांकन अध्ययन किया जाना चाहिये ।
- **संरक्षित क्षेत्रों का वसितार:** लुप्तप्राय जानवरों और पौधों की रक्षा के लिये अधिक-से-अधिक राष्ट्रीय उद्यानों एवं अभयारण्यों की स्थापना की जानी चाहिये ।

स्रोत: डाउन टू अर्थ

PDF Reference URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/etalin-hydro-power-project>

